International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

कला एवं संस्कृति पर डिजिटलीकरण का प्रभाव: लोक संगीत के विशेष संदर्भ में

अंशुमान कुमार

शोध अर्चेता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, झारखंड राय विश्वविद्यालय, रांची.

Email: anshumansinha83@gmail.com

सार प्रस्तुति

डिजिटल क्रांति ने साहित्य और संगीत के परिदृश्य को बदल दिया है, कला और संस्कृति को एक नया आयाम दिया है। पारंपरिक लोकगीतों और रीति-रिवाजों को संरक्षित और बढ़ावा देने में डिजिटल मीडिया की अहम भूमिका रही है। अतीत की यादें, कहानियाँ और गीत अब वैश्विक स्तर पर साझा किए जा सकते हैं, जिससे सांस्कृतिक विरासत की अखंडता को बनाए रखने में मदद मिलती है। यादों और भावनाओं की इन झलकियों के माध्यम से लोकगीत हमारे राष्ट्रीय इतिहास और सांस्कृतिक पहचान को जीवंत बनाए रखते हैं। जिस तरह शारदा सिन्हा ने अपने संगीत से लोक संस्कृति को पुनर्जीवित किया, उसी तरह आधुनिक तकनीक ने भी इन गीतों के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर साझा किए गए लोकगीत स्थानीय परंपराओं के साथ-साथ वैश्विक दर्शकों तक आसानी से पहुँच सकते हैं। इस तकनीकी क्रांति ने संगीतकारों और कलाकारों के लिए नए रास्ते खोले हैं, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संगम होता है। लोकसंगीत की मनमोहक धुनें और उनके पीछे की कहानियाँ अब इंटरनेट के विशाल दायरे में एक नई पहचान बना रही हैं। कलाकार न केवल अपने गीतों को सुरक्षित रख रहे हैं बल्कि व्यापक दर्शकों से सफलतापूर्वक जुड़ भी

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

रहे हैं। आज के डिजिटल परिदृश्य में संगीत और संस्कृति के संरक्षण ने एक नया महत्व हासिल कर लिया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लोकगीतों के संग्रह और प्रसार ने न केवल उन्हें वर्तमान पीढ़ी के लिए पुनर्जीवित किया है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनकी प्रासंगिकता भी सुनिश्चित की है। इस तरह, हमारी सांस्कृतिक विरासत एक जीवंत समकालीन मंच पर विकसित हो रही है, जो पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक रुझानों के साथ संतुलित करती है। परंपरा और नवाचार का यह मिश्रण हमें याद दिलाता है कि कला और संस्कृति को संरक्षित करने में प्रौद्योगिकी की भूमिका अमूल्य है। डिजिटल युग की इस परिवर्तनकारी क्रांति ने हमें हमारे अतीत से जोड़ा है, हमारे वर्तमान को समृद्ध किया है और हमें भविष्य की ओर निर्देशित किया है।

की वर्डस: **कला एवं संस्कृति, डिजिटलीकरण, सोशल मीडिया, लोकसंगीत, संरक्षण,संवर्धन**

पूर्ण पेपर प्रस्तुति

भूमिका :

लोक और पारंपरिक मीडिया संस्कृति और संचार की जीवंत अभिव्यक्तियाँ हैं, जो विशिष्ट समुदायों की ऐतिहासिक प्रथाओं में गहराई से निहित हैं। इन रूपों में संगीत, नृत्य, रंगमंच, मौखिक कहानी, शिल्प, अनुष्ठान और त्यौहार शामिल हैं, जो सभी पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। भारत में, लोक कला मनोरंजन से परे एक उद्देश्य पूरा करती है; यह ज्ञान, मूल्यों और इतिहास को व्यक्त करके सामुदायिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो अन्यथा अलिखित रह जाती है। जबकि डिजिटल मीडिया के उदय ने कई लोगों के लिए पहुँच और मान्यता को बढ़ाया है, इसने आधुनिकीकरण और तकनीकी प्रगति के कारण चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं, जिससे पारंपरिक कला रूपों की उपेक्षा और गिरावट आई है। फिर भी, लोक और पारंपरिक मीडिया हमारी सांस्कृतिक विरासत को समझने और भविष्य की पीढ़ियों के

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

लिए इसके संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण बने हुए हैं। वे सांस्कृतिक विविधता, रचनात्मकता और पहचान का जश्न मनाते हैं, उनके संरक्षण और पुनरोद्धार में निवेश करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

'अंडरस्टैंडिंग मीडिया: द एक्सटेंशन्स ऑफ मैन' पुस्तक में लेखक मार्शल मैक्लुहान संचार प्रौद्योगिकियों के विकास का एक सम्मोहक विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं, उन्हें चार अलग-अलग चरणों में वर्गीकृत करते हैं जो मानवता की प्रगति को दर्शाते हैं। पहला चरण मौखिक परंपरा है, जहाँ संस्कृति, इतिहास और लोककथाएँ कहानी कहने के माध्यम से प्रसारित की जाती थीं। इस चरण में, भाषा मुख्य रूप से श्रवण थी, जो स्मृति और सामुदायिक भागीदारी पर बहुत अधिक निर्भर थी, जिसमें कथाओं की संरचना के लिए कोई औपचारिक व्याकरण नहीं था। दूसरा चरण लेखन के आगमन के साथ उभरा, जिसने न केवल रिकॉर्ड की गई भाषा की अवधारणा को पेश किया, बल्कि व्याकरणिक संरचनाओं को भी बढ़ाया। इस नवाचार ने विविध साहित्य के समृद्ध ताने-बाने का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे जटिल विचारों को कैद और साझा किया जा सका। तीसरे चरण की विशेषता प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार है, जिसने विभिन्न भाषाओं में पाठों को बड़े पैमाने पर उत्पादित करने की अनुमति देकर संचार में क्रांति ला दी, इस प्रकार ज्ञान तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाया और अधिक सूचित समाज को बढ़ावा दिया। प्रत्येक चरण मनुष्यों के विचारों को साझा करने और उनसे बातचीत करने के तरीके में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देता है।जैसा कि मैकलुहान ने स्पष्ट रूप से कहा, मीडिया विकास का चौथा चरण दृश्य और कथात्मक तत्वों के अभिसरण को दर्शाता है, एक घटना जिसे उन्होंने "द्वितीयक मौखिकता" कहा। यह चरण एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी विशेषता टेलीविजन के एक प्रमुख माध्यम के रूप में उदय और व्यापक रूप से अपनाए जाने से है (मैकलुहान 1964)। प्रत्येक पूर्ववर्ती चरण ने पारंपरिक और लोक संस्कृतियों को प्रसारित करने, स्रोत बनाने और संरक्षित करने के तरीकों को विशिष्ट रूप से प्रभावित किया है, प्रत्येक ने लोकगीत और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

संचार और दस्तावेज़ीकरण के अपने तरीकों में विकसित होने के लिए अलग-अलग रास्ते पेश किए हैं। इस प्रवचन में, हंगेरियन लेखक ज़ोल्टन सुट्स ने वर्ल्ड वाइड वेब की अवधारणा का योगदान दिया, जिसकी तीव्र प्रगति ने निस्संदेह संचार और मानव संपर्क के परिदृश्य को बदल दिया है। अपने काम, "मेटाफ़ोर्स ऑफ़ द वर्ल्ड वाइड वेब: एन इंट्रोडक्शन टू द आर्ट ऑफ़ न्यू मीडिया" में, सुट्स का मानना है कि इंटरनेट और आभासी संचार के उद्भव ने स्पर्शनीय जुड़ाव और संवर्धित वास्तविकता (सुट्स 2013) की विशेषता वाले युग की शुरुआत की है। उनका सुझाव है कि यह वर्तमान चरण अपने पूर्ववर्तियों के तत्वों को समाहित करता है, जो संचार के लिए एक व्यापक माध्यम प्रदान करता है जो ध्वनि, दृश्य और स्पर्श को एकीकृत करता है। कथात्मक कहानी कहने से संवर्धित वास्तविकता तक की यह प्रगति सूचना के उत्पादन और प्रसार, साथ ही इसके दस्तावेज़ीकरण में चल रहे विकास को उजागर करती है। जैसे-जैसे संचार परिदृश्य बदलता है, वैसे-वैसे सूचना को रिकॉर्ड करने, संरक्षित करने और साझा करने की कार्यप्रणाली भी बदलती है। संचार प्रौद्योगिकियों में प्रगति के प्रकाश में, लोक संस्कृति के पारंपरिक तत्वों को संग्रहीत करने और पुनः प्राप्त करने के तरीके भी विकसित हो रहे हैं। इस प्रकार, एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है: हम संचार प्रौद्योगिकी के इस पाँचवें चरण में समकालीन मीडिया की क्षमताओं का इष्टतम उपयोग कैसे कर सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लोक संस्कृति और परंपराओं को भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रभावी ढंग से संरक्षित किया जाए जो अपनी विरासत से जुड़ने के लिए उत्सुक हैं?

सांस्कृतिक विरासत संरक्षण का प्राथमिक उद्देश्य उन अमूर्त पहलुओं को पहचानना और उनकी रक्षा करना है जो किसी समुदाय की पहचान के सार को मूर्त रूप देते हैं। इन महत्वपूर्ण तत्वों में, पारंपरिक संगीत विरासत को व्यक्त करने के लिए एक सम्मोहक माध्यम के रूप में सामने आता है, जो न केवल धुनों और लय को बल्कि लोगों की कहानियों, भावनाओं और मूल्यों की भावना को भी समेटे हुए है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

लोक संगीत के विशेष संदर्भ के साथ लोक कला रूपों का एक संक्षिप्त विवरण तथा डिजिटल और सामाजिक मीडिया के साथ इसका संबंध

सांस्कृतिक संरक्षण के क्षेत्र में, डिजिटल मीडिया एक आवश्यक कड़ी बन गया है जो भारत की प्राचीन विरासत को समकालीन समाज की अभिनव भावना से जोड़ता है। उदाहरण के लिए, हम देख सकते हैं कि कैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म की क्षमताएँ शारदा सिन्हा के लोकगीतों में कैद समृद्ध परंपराओं को मैथिली, भोजपुरी, मगही, वज्जिका और अंगिका अभिव्यक्तियों की जीवंत लय के साथ मिश्रित करने की अनुमति देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप ध्वनि और भावना का एक विसर्जित चित्रांकन होता है। जैसे-जैसे संरक्षण के तरीके विकसित होते हैं, यह विरासत- जो पहले घनिष्ठ सामुदायिक समारोहों और पारंपरिक त्योहारों तक सीमित थी- अब वैश्विक मंच पर केंद्र में आ गई है, लोक परंपराओं की स्थायी सुंदरता को प्रदर्शित करती है और एक नई पीढ़ी को उस सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करने के लिए प्रेरित करती है जिसने एक विकसित, दूरदर्शी भारत को आकार दिया है और आकार देना जारी रखा है। वर्चुअल कॉन्सर्ट, सोशल मीडिया और ऑनलाइन कॉलेबोरेशन के माध्यम से, ये क्षेत्रीय ध्वनियाँ पनपती हैं। आज के डिजिटल परिदृश्य में, कलाकार न केवल अपनी जड़ों को संरक्षित कर रहे हैं, बल्कि पारंपरिक धुनों को आधुनिक शैलियों के साथ मिलाकर एक ऐसा गतिशील संलयन बना रहे हैं जो युवा और वृद्ध दोनों दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित होता है। यह नया दृष्टिकोण न केवल नए श्रोताओं को आकर्षित करता है, बल्कि क्रॉस-कल्चरल एक्सचेंज को भी बढ़ावा देता है, जिससे वैश्विक संगीत परिदृश्य समृद्ध होता है। जैसे-जैसे विविध पृष्ठभूमि के कलाकारों के बीच सहयोग आम होता जा रहा है, संगीत उद्योग में रोमांचक विकास हो रहा है। परंतु साथ ही विकास का यह पक्ष पारंपरिक शैलियों को चुनौती भी देता है । हालांकि कुछ कलाकार निश्चित रूप से पारंपरिक धुनों को आधुनिक शैलियों के साथ मिश्रित कर रहे हैं, लेकिन इस पद्धति से सांस्कृतिक क्षीणता और कलात्मक अभिव्यक्ति में प्रामाणिकता में संभावित गिरावट की चिंता उत्पन्न होती है।अनेक पारंपरिक संगीत रूपों में गहरा सांस्कृतिक महत्व

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

और ऐतिहासिक संदर्भ होता है जो समकालीन रुझानों से प्रभावित हो सकता है। चूंकि कलाकार नवाचार और संलयन पर जोर देते हैं, इसलिए वे अनजाने में सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के बजाय व्यावसायिक अपील पर अधिक महत्व दे सकते हैं। इससे ध्वनियों का एकरूपीकरण हो सकता है जो विभिन्न संगीत परंपराओं की विशिष्टता को कम कर देता है। इसके अलावा, यह मिश्रण शुद्धतावादियों को अलग-थलग कर सकता है जो मानते हैं कि असली कलात्मकता आधुनिक प्राथमिकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें संशोधित करने के बजाय मूल रूपों को संरक्षित और सम्मान देने में पाई जाती है। नतीजतन, हालांकि नवाचार आवश्यक है, कलात्मक प्रयासों में सांस्कृतिक विरासत की अखंडता को बनाए रखने के महत्व को पहचानना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

लोकगीतों की अस्मिता और सोकशाल मीडिया : सुखद संभावनाओं एवं चुनौतियां

आज के डिजिटल परिदृश्य में, समकालीन मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से लोक संगीत को बढ़ावा देना और प्रसारित करना सिर्फ़ एक अवसर नहीं बल्कि एक ज़िम्मेदारी भी है। इन साधनों के साथ जुड़ने से लोकगीतों, वाद्ययंत्रों और नृत्यों के मूल रूपों का संरक्षण व संवर्धन संभव है , साथ ही यह सुनिश्चित होता है कि उनकी प्रामाणिकता सुरक्षित रहे। हालाँकि, लोकगीतों की सादगी और स्वाभाविक सार आधुनिक प्रस्तुति की जटिलताओं से आसानी से प्रभावित हो सकता है। लोकसंगीत का क्षेत्र अन्य संगीत शैलियों की तुलना में कम विस्तृत लग सकता है, लेकिन इसका प्रभाव व्यापक है, जो अक्सर विभिन्न संगीत शैलियों में घुसपैठ करता है। निष्कर्ष रूप में, डिजिटल युग में लोकसंगीत के विकास के लिए परंपरा और आधुनिकता के बीच एक नाजुक संतुलन की आवश्यकता है। गुणवत्ता और प्रामाणिकता को बढ़ावा देकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि लोकसंगीत आगे भी फलता-फूलता रहे, अपनी भावनाओं और कहानियों की समृद्ध टेपेस्ट्री को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाता रहे और साथ ही हमारी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहे। लोकसंगीत की तुलना पानी से की जा सकती है, एक तरल इकाई जो अपने आस-पास के वातावरण के साथ

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

सहजता से ढल जाती है। यह अनुकूलनशीलता एक ताकत और चुनौती दोनों है, क्योंकि यह लोक परंपराओं के निर्बाध प्रवाह को संरक्षित करने के महत्व को रेखांकित करती है, जबकि उन्हें एक सचेत कलात्मक दृष्टि और व्यवस्थित समझ के साथ भरती है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, अनुभवजन्य अंतर्दृष्टि, भाषाई सूक्ष्मता, अनुमानात्मक समझ और पारंपरिक ज्ञान (आप्त वचन) सहित ज्ञान के विभिन्न रूपों को एकीकृत करना आवश्यक है। इस बहुआयामी दृष्टिकोण का उद्देश्य नए सौंदर्य आयामों को पेश करके लोक संगीत को पुनर्जीवित करना है। इन चुनौतियों के बीच, डॉ. शारदा सिन्हा जैसे व्यक्ति लोक संगीत परिदृश्य में आशा और अखंडता के प्रकाश स्तंभ के रूप में सामने आते हैं। लोक संगीत की वैश्विक प्रशंसा में उनके योगदान के लिए प्रसिद्ध, सिन्हा ने अपनी सांस्कृतिक जड़ों का सम्मान करते हुए आधुनिकता की जटिलताओं को कुशलता से संभाला है। उनका काम इस बात का उदाहरण है कि कैसे सुसंस्कृत लोक गीत पारंपरिक कथाओं के सार को बनाए रख सकते हैं, साथ ही शास्त्रीय और अर्ध-शास्त्रीय परंपराओं से प्रभावित परिष्कृत गीतों और धुनों के माध्यम से अपनी प्रस्तुति सौंदर्यीकरण सकते हैं। लोक संगीत परंपरा के भीतर एक सख्त गुणवत्ता नियंत्रण की आवश्यकता है। लोकगीत मानवीय अनुभव की सबसे गहरी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए वाहन के रूप में काम करते हैं, जो रंगीन मनोरंजन और मार्मिक कहानी कहने के साथ रोजमर्रा की जिंदगी की सांसारिकता को सुशोभित करते हैं। विवाह उत्सव के दौरान पारंपरिक हास्य गीत जो अक्सर अंतरंग सेटिंग में गाए जाते हैं, ऐतिहासिक रूप से चंचल विनोद और यहां तक कि हल्के "गाली-गलौज" भी शामिल करते हैं। हालाँकि, जब इन गीतों को उनके पारिवारिक संदर्भ से हटाकर सार्वजनिक क्षेत्र में ला दिया जाता है, तो उनकी गलत व्याख्या होने लगती है, और फिर वही लोकगीत कथित अश्लीलता में बदल जाते हैं ।

डिजिटल मीडिया और छठ महापर्व का वैश्वीकरण: लोक गायिका शारदा सिन्हा के संदर्भ में

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

छठ माहा पर्व की भव्यता और शारदा सिन्हा के अनुपम गीतों की मधुरता ने जहाँ राज्य का सम्मान बढ़ाया है, वहीं इन गीतों ने भारतीय जड़ों की ओर लोगों की आकर्षण भावना को पुनर्जीवित किया है। सोशल मीडिया, इंटरनेट और डिजिटलीकरण के योगदान से न केवल यह पर्व और संगीत आधुनिक युग के साथ कदम से कदम मिला रहे हैं, बल्कि विश्वभर में भारतीय लोक संस्कृति की छाप गहरी हो रही है। कई समाजिक मंचों पर यह व्यक्त किया गया है कि शारदा सिन्हा के लोकगीतों ने आम जनता में अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने की भावना को जागृत किया है। इस प्रकार, संगीत और डिजिटल जगत के परस्पर संपर्क ने पारंपरिक मूल्यों को एक नवीन पहचान और वैश्विक सम्मान प्रदान किया है, जो भारतीय लोक संगीत की समृद्ध परंपरा को पुनः स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। इस प्रक्रिया ने न केवल सांस्कृतिक पहचान को मजबूती दी है, बल्कि युवाओं में अपनी धरोहर के प्रति गर्व का भाव भी उत्पन्न किया है। इसके परिणामस्वरूप, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इन गीतों का मंचन होने लगा है, जिससे नई पीढ़ी के कलाकार भी प्रेरित हो रहे हैं। इस तरह, छठ पर्व की महत्ता और शारदा सिन्हा के गीतों ने एक नई सामाजिक जागरूकता को जन्म दिया है, जो हमारे सांस्कृतिक इतिहास को आगे बढ़ाने में सहायक होगा। इस जागरूकता के फलस्वरूप, युवा वर्ग अब अपने परिवेश और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति अधिक संवेदनशील हो रहा है, जिसके चलते वे अपने लोक संगीत और परंपराओं को सहेजने के लिए सक्रिय रूप से प्रयासरत हैं। इस नई चेतना ने स्थानीय कलाकारों को भी प्रोत्साहित किया है कि वे अपनी कला को प्रस्तुत करने के लिए नए मंचों की तलाश करें। इसके अलावा, विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में लोक संगीत और नृत्य की कक्षाएं शुरू हुई हैं, जिससे पारंपरिक कलाओं का संरक्षण और संवर्धन हो रहा है। इस प्रकार, छठ पर्व और शारदा सिन्हा के गीतों ने न केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण को जन्म दिया है, बल्कि यह एक सामाजिक आंदोलन का रूप भी ले रहा है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी धरोहर बन सकता है। इस आंदोलन की सफलता के लिए आवश्यक है कि हम सभी मिलकर अपनी सांस्कृतिक विरासत को

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

संजोएं और उसे आगे बढ़ाने में योगदान दें। स्थानीय समुदायों में इस दिशा में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न अभियान और कार्यशालाएँ आयोजित की जा रही हैं, जिससे लोग अपने लोक गीतों और नृत्यों की महत्ता को समझ सकें। इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफार्मों पर इन कलाओं का प्रदर्शन करने से कलाकारों को वैश्विक दर्शकों के सामने आने का अवसर मिल रहा है।

वर्ष 2016 में, पद्मविभूषण शारदा सिन्हा जी ने यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप जैसे आधुनिक माध्यमों का उपयोग करते हुए अपना छठ गीत 'पहिले पहिल छठी मईया' रिलीज़ किया। इस गीत ने लोकप्रियता के सारे कीर्तिमान ध्वस्त कर दिए और देखते ही देखते विदेशों में भी जंगल की आग की तरह फैल गया। उनके असंख्य श्रोताओं ने फेसबुक और ईमेल के माध्यम से उन्हें व्यक्तिगत संदेश भेजकर बताया कि इस गीत से प्रेरित होकर उन्होंने स्वयं छठ पर्व करने का संकल्प लिया। चाहे वे अमेरिका, रूस, इंग्लैंड, अरब या अफ्रीका में कहीं भी हों, उन्होंने वहाँ किसी जलाशय की खोज करके पूरे चार दिनों तक इस पावन पर्व को मनाया। [1]

आधुनिकता की अंधी दौड़ में जहाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहरें और संस्कार क्षीण होते जा रहे हैं, वहीं इस लोकगीत ने अनेक किशोरियों को पश्चिमी सभ्यता के आवरण को त्यागकर भारतीय परिधान में चार दिनों तक रहने के लिए प्रेरित किया। जो युवतियाँ मांग में सिंदूर लगाना पुराना ख़याल मानती थीं, वे अब गर्व से अपनी पूरी मांग में सिंदूर भरकर सोशल मीडिया पर तस्वीरें साझा करने लगीं। इस घटना को एक उदाहरण के रूप में देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक मीडिया के सदुपयोग से किस प्रकार हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को पुनर्जीवित किया जा सकता है। उस लोकप्रिय भोजपुरी छठ गीत के बोल कुछ ऐसे हैं :

---

[1] विदुषी शारदा सिन्हा व्यक्तित्व एवं संगीत , शोधकर्ता अंशुमन कुमार , झारखंड राय विश्वविद्यालय ,रांची

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

पहिले पहिल हम कईलीं छठी मईया बरत तोहार ।

करिहऽ क्षमा छठी मईया भूल चूक गलती हमार।।

गोदी के बालकवा के दिहऽ छठी मईया ममता दुलार

पिया के सनेहिया बनईह मईया दिहऽ सुख सार ।

नारियल केरवा धौउदवा साजल नदिया किनार।।

सुनिहऽ अरज छठी मईया बढे कुल परिवार ।

घाट सजवली मनोहर मईया तोर भगती अपार ।।

लिहीं न अरगिया हे मईया दीहीं आशीष हजार

गीत कार : हृदय नारायण झा

निष्कर्ष

तर्क के आधार पर यह माना जा सकता है है कि सहयोगात्मक प्रयास और शैक्षिक पहल समान रुप से लाभकारी और समावेशी होंगे। वास्तव में, सत्ता की गतिशीलता अक्सर तय करती है कि कौन सी आवाज़ सुनी जाए और कौन सी परंपराएँ संरक्षित की जाएँ। हाशिए पर पड़े समुदायों को अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को अनदेखा या अधिक प्रभावशाली कथाओं के पक्ष में गलत तरीके से प्रस्तुत किए जाने की विध्वंसकारी संभावननाएं हमेशा मौजूद होती हैं ,जो वास्तविक सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने के बजाय मौजूदा असमानताओं को बनाए रखता है। दूसरा, नवाचार और प्रामाणिकता के बीच "सामंजस्यपूर्ण संतुलन" हासिल करने पर ध्यान केंद्रित करना चुनौतियों को प्रस्तुत कर सकता है। यह संतुलन बताता है कि अभिव्यक्ति के पारंपरिक रूपों को आधुनिक प्राथमिकताओं के साथ संरेखित करने के लिए संशोधित किया जा सकता है, अक्सर उन समुदायों के दृष्टिकोणों को पर्याप्त रुप से ध्यान में

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

रखे बिना जिनसे ये परंपराएँ उत्पन्न होती हैं। यह एक ऐसे परिदृश्य को जन्म दे सकता है जहाँ सबसे अधिक व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य अनुकूलन प्रामाणिक प्रतिनिधित्व को पीछे छोड़ देते हैं, अंततः उन समुदायों को चुप करा देते हैं जिन्हें हम संरक्षित करना चाहते हैं। स्वर्गीय डॉ. शारदा सिन्हा का योगदान लोकगीतों के पुनर्जागरण के मद्देनजर सराहनीय है, लोक परंपराओं की डिजिटल पुनर्कल्पना उनके अस्तित्व और विकास के लिए आवश्यक है। आधुनिक तकनीक और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म को अपनाकर, लोक परंपराएँ व्यापक दर्शकों तक पहुँच सकती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे आज के समाज में प्रासंगिक बनी रहें।सांस्कृतिक विरासत के उत्सव में उन लोगों की आवाज़ को प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो उन परंपराओं के भीतर रहते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी आधुनिकीकरण उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के सम्मान और गहरी समझ के साथ किया जाता है। सबसे पहले, लोक और पारंपरिक मीडिया के संरक्षण और संवर्धन के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर निर्भरता अनजाने में कमोडिटीकरण के खतरे को इंगित करता है। सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को बाज़ार में बिकने वाली सामग्री में बदलकर, हम उनके महत्व को कम करने और उन्हें केवल मनोरंजन उत्पादों तक सीमित करने का जोखिम उठाते हैं जो उनके मूल संदर्भों का सम्मान करने के बजाय वैश्विक स्वाद को पूरा करते हैं।इसलिए इस विषय पर गंभीरता से साकरात्मक कदम उठाने की बेहद आवश्यकता महसूस होती है । निष्कर्ष रूप में, जबकि सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा का आह्वान प्रशंसनीय है, आधुनिक हस्तक्षेपों के संभावित परिणामों की आलोचनात्मक रूप से जाँच करना और व्यावसायीकरण और सतही सहयोग पर प्रामाणिकता और सामुदायिक एजेंसी को प्राथमिकता देना आवश्यक है।अंततः, यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम इन बहुमूल्य विरासतों को सहयोगात्मक प्रयासों, शैक्षिक पहलों और स्थानीय से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक फैली हुई भागीदारी के माध्यम से सुरक्षित रखें, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हमारी सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य कथा आने वाली पीढ़ियों के लिए भी फलती-फूलती रहे। भारतीय लोक और पारंपरिक मीडिया की

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

जीवंत ताने-बाने से पता चलता है कि हमारी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ केवल मनोरंजन से परे हैं; वे हमारे इतिहास, मूल्यों और सामुदायिक अनुभवों के गतिशील अवतार हैं। पारंपरिक संगीत की मनमोहक लय, नृत्य की सुंदर हरकतों, रंगमंच की आकर्षक कहानियों और समृद्ध मौखिक परंपराओं के माध्यम से व्यक्त की गई पिछली पीढ़ियों की बुद्धिमत्ता, हमारे समकालीन डिजिटल परिदृश्य में अपने अस्तित्व के लिए निरंतर खतरों का सामना कर रही है। मार्शल मैक्लुहान के मीडिया विकास की रूपरेखा दर्शाती है कि जैसे-जैसे संचार के तरीके बदलते हैं, वैसे-वैसे लोक कला को संरक्षित करने, उसका दस्तावेजीकरण करने और उसे साझा करने की तकनीकें भी बदलती हैं, जो अब रोमांचक नए आयामों को अपनाती हैं। इस बदलते संदर्भ में, डॉ. शारदा सिन्हा जैसे कलाकारों का उल्लेखनीय योगदान एक मार्मिक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि आधुनिक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करके, सदियों पुरानी धुनों, लोकगीतों और सांस्कृतिक प्रथाओं को फिर से कल्पित किया जा सकता है और वैश्विक मंच पर मनाया जा सकता है। हालाँकि, जब हम आधुनिक मीडिया से जुड़ते हैं, तो नवाचार और प्रामाणिकता के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाना महत्वपूर्ण होता है। हमें पारंपरिक मूल्यों की रक्षा करनी चाहिए, सांस्कृतिक विविधता का जश्न मनाना चाहिए और डिजिटलीकरण और वैश्वीकरण के दायरे में आगे बढ़ते हुए लोक संगीत की मौलिकता को बनाए रखना चाहिए। यह संतुलन न केवल हमारी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करेगा बल्कि एक समृद्ध विरासत की नींव भी रखेगा जिसे आने वाली पीढ़ियाँ संजो कर रख सकती हैं।

विकसित भारत @2047 : लोक कला एवं संस्कृति के लिए संभावनाएं

जैसा कि हम 2047 में एक विकसित भारत की कल्पना करते हैं, यह स्पष्ट है कि कला, संस्कृति और डिजिटल मीडिया के बीच एक गतिशील और जटिल संवाद होगा। डिजिटलीकरण की तीव्र प्रगति ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए नए रास्ते खोले हैं, साथ ही साथ पारंपरिक कलाओं और लोककथाओं की प्रामाणिकता के बारे में चर्चाओं को बढ़ावा दिया है। इस

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

विकसित होते माहौल में, सामाजिक और शैक्षणिक संस्थान पारंपरिक प्रथाओं को संरक्षित करने और नवाचार को बढ़ावा देने के बीच संतुलन बनाने के लिए काम करेंगे। डिजिटल मीडिया न केवल कलाकारों के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान करेगा, बल्कि सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने में भी सहायता करेगा। फिर भी, चुनौतियाँ बनी हुई हैं - व्यावसायिकता के बढ़ते दबाव के बीच पारंपरिक शैलियों को अपनी मौलिकता खोने का खतरा है। इसलिए, कलाकारों और समाज दोनों के लिए अपनी सांस्कृतिक जड़ों का सम्मान करते हुए और नए प्रारूपों को अपनाते हुए डिजिटल उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना आवश्यक है जो भविष्य की पीढ़ियों को अपनी विरासत से जुड़ने की अनुमति देगा। अंततः, हम केवल यह आशा कर सकते हैं कि 2047 तक विकसित भारत में कला और संस्कृति का प्रक्षेपवक्र नवाचार, तकनीकी प्रगति और परंपरा के सम्मान पर निर्भर करेगा, जिससे संतुलित और जीवंत सांस्कृतिक परिदृश्य को विकसित करने के लिए सामूहिक प्रयास सक्षम होंगे।

References

1. Sharma, S. R. V. (n.d.). *मैथिली संस्कार गीत.* बिहार: राष्ट्रभाषा परिषद. पृ 102-103
2. Choudhury, S. (2024). *The role of social media in promoting and preserving Indian music and dance traditions*. International Journal of Multidisciplinary Research, 2(5). Retrieved from www.theacademic.in
3. McLuhan, M. (1964). Understanding Media: The Extensions of Man. McGraw-Hill.
4. Kolay, Saptarshi. (2016). Cultural Heritage Preservation of Traditional Indian Art through Virtual New-media. Procedia - Social and Behavioral Sciences. 114. 201-206.
5. सैंडविक, के. (2011)। फियोना कैमरुन और सारा केंडरडाइन (संपादक): डिजिटल सांस्कृतिक विरासत का सिद्धांत। एक आलोचनात्मक चर्चा। कैम्ब्रिज, एमए: द एमआईटी प्रेस। 2007/2010। मेडीकल्चर: जर्नल ऑफ मीडिया एंड कम्युनिकेशन रिसर्च, 36(50), 10 पृ. https://doi.org/10.7146/mediekultur.v27i50.5244
6. स्पार्क्स, एम. (2020). अमूर्त विरासत के संरक्षण के लिए सोशल मीडिया कैसे एक परिसंपत्ति हो सकता है। 18 मार्च 2025 को पुनःप्राप्त। https://medium.com/thoughts-on-world-

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

heritage/how-social-media-can-be-an-asset-for-the-preservation-of-intangible-heritage-666a7e3d7546

7. Szuts, Z. (2013). Metaphors of the World Wide Web: An Introduction to the Art of New Media. Osiris Kiado.

8. यूनेस्को. (n.d.). अमूर्त सांस्कृतिक विरासत. https://ich.unesco.org/en/home से लिया गया.